ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 418-421**
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

रामलला नहछू : लोकसंस्कार से सांस्कृतिक सहभागिता तक तुलसी के काव्य में लोकचेतना, स्त्री–अनुभव और श्रम–संस्कृति का पुनर्पाठ

प्रोफेसर मुन्ना तिवारी
आचार्य, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी (उ0प्र0) भारत

Received-12.12.2021, Revised-18.12.2021, Accepted-24.12.2021 **E-mail : munnagkp01@gmail.com**

सारांशः ***गोस्वामी तुलसीदास की रामलला नहछू आकार की दृष्टि से लघु, किंतु सांस्कृतिक अर्थवत्ता की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचना है। सामान्यतः इसे 'नहछू' नामक मांगलिक संस्कार और सोहर–परंपरा से संबद्ध कृति के रूप में देखा जाता है; किंतु इसका गंभीर पाठ यह स्पष्ट करता है कि यहाँ किसी संस्कार का मात्र विवरण नहीं, बल्कि मध्यकालीन उत्तर भारतीय लोकजीवन की बहुस्तरीय सांस्कृतिक संरचना अभिव्यक्त हुई है। अयोध्या का राजप्रासाद, लोकस्त्रियों की सक्रिय भागीदारी, नाइन की अनुष्ठानिक भूमिका, नेग–न्योछावर, गारी, हास–परिहास, सज्जा, श्रम और राम के बालरूप का वात्सल्य– ये सभी मिलकर ऐसी सांस्कृतिक संरचना निर्मित करते हैं जिसमें धर्म और लोक, राजसत्ता और समुदाय, श्रम और उत्सव तथा श्रद्धा और आत्मीयता के बीच कोई कठोर विभाजन नहीं रह जाता।***

इस शोधपत्र का केंद्रीय तर्क यह है कि रामलला नहछू को केवल भक्तिकाव्य या लोकगीत के रूप में पढ़ना इसकी अंतर्वस्तु को सीमित करना होगा। यह कृति लोकाचार के माध्यम से सामाजिक संबंधों, स्त्री–सांस्कृतिक सक्रियता, व्यवसायगत पारस्परिकता और सामुदायिक उत्सवधर्मिता को रूपायित करती है। तुलसी का 'राम' यहाँ महाकाव्य के मर्यादा–पुरुषोत्तम से पहले 'रामलला' है– अर्थात् परिवार और लोकसमुदाय के आत्मीय संसार का बालक। इसीलिए कृति का आध्यात्मिक अनुभव अनुष्ठानिक दूरी से नहीं, बल्कि स्पर्श, सेवा, गीत, हास्य, वात्सल्य और सहभागिता से निर्मित होता है।

कुंजीभूत शब्द– रामलला नहछू, तुलसीदास, लोकसंस्कार, सोहर, लोकचेतना, स्त्री–अनुभव, श्रम–संस्कृति, लोकभक्ति, अवधी।

1. प्रस्तावना : लघु कृति, व्यापक सांस्कृतिक संसार– तुलसीदास का साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना में प्रायः रामचरितमानस के विराट आख्यान के संदर्भ में पढ़ा जाता है। किंतु तुलसी की लघु रचनाएँ उनके काव्यलोक के ऐसे पक्षों को उद्घाटित करती हैं, जहाँ महाकाव्यात्मक विस्तार के स्थान पर लोकजीवन की सूक्ष्म गतिविधियाँ केंद्रीय हो जाती हैं। रामलला नहछू इसी दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती है। उपलब्ध पाठ में इसे अवधी भाषा में रचित, सोहर–छंद में निबद्ध और 'नहछू' नामक मांगलिक लोकसंस्कार पर आधारित लघु कृति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आरंभ में सरस्वती, गणपति और गौरी का मंगलाचरण तथा उसके बाद "रामलला कर नहछू गाइ सुनाइय हो" जैसी पंक्ति कृति की मूल सांस्कृतिक दिशा निर्धारित करती है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 1–2)

"रामलला कर नहछू गाइ सुनाइय हो।"

यहाँ 'गाना' केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं है; वह स्वयं संस्कार का अंग बन जाता है। अर्थात् काव्य का विषय और काव्य का सामाजिक प्रयोजन एक–दूसरे से जुड़ जाते हैं। इसी बिंदु पर रामलला नहछू को पढ़ने का एक अधिक सार्थक मार्ग खुलता है– यह कृति संस्कार का वर्णन नहीं करती, बल्कि स्वयं एक सांस्कृतिक प्रदर्शन और सामूहिक स्मृति का पाठ निर्मित करती है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 2–3)

2. 'नहछू' : संस्कार से सांस्कृतिक संकेत तक– 'नहछू' उत्तर भारतीय लोकसंस्कारों की उस परंपरा से संबंधित है जिसमें शुभ अवसर से पहले नख–संस्कार, चरण–सज्जा और उससे जुड़े नेग–व्यवहार का विधान मिलता है। उपलब्ध पाठ में इसकी व्युत्पत्ति को सामान्यतः 'नख–क्षुर' से जोड़ा गया है और विवाह, यज्ञोपवीत तथा अन्य मांगलिक अवसरों से इसकी संबद्धता बताई गई है। नाइन द्वारा चरणों में महावर लगाना, नखों का सांकेतिक स्पर्श करना तथा उसके पश्चात् नेग प्राप्त करना इस संस्कार की सामाजिक संरचना का हिस्सा है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 3–4)

यहाँ महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नहछू को केवल शारीरिक स्वच्छता की प्रक्रिया मानना इसके सांस्कृतिक आशय को संकुचित कर देगा। यह संक्रमण–संस्कार की तरह कार्य करता है– व्यक्ति एक सामाजिक अवस्था से दूसरी अवस्था की ओर बढ़ता है और समुदाय उस परिवर्तन को उत्सव में रूपांतरित करता है। नहछू में शरीर, परिवार, समुदाय और मंगलविश्वास एक साथ सक्रिय दिखाई देते हैं।

इस संदर्भ में 'नहछू' का वास्तविक सांस्कृतिक अर्थ व्यक्ति को समुदाय द्वारा स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया के रूप में भी समझा जा सकता है। संस्कार व्यक्ति का निजी अनुभव नहीं रहता; गीत, नेग, श्रम और सामूहिक सहभागिता उसे सार्वजनिक सांस्कृतिक अनुभव में परिवर्तित कर देते हैं। (उपलब्ध पाठ, पृ. 3–4)

3. पाठ, रचनाकाल और रामकथा से भिन्न लोक–स्मृति– रामलला नहछू के रचनाकाल के विषय में निश्चित निष्कर्ष उपलब्ध नहीं है। स्वयं उपलब्ध अध्ययन–पाठ में भाषा, छंद, शैली और विषयवस्तु के आधार पर इसे तुलसी की आरंभिक अथवा आरंभिक–मध्यवर्ती रचनात्मक अवस्था से जोड़ने की संभावना व्यक्त की गई है, किंतु किसी निश्चित तिथि को निर्णायक रूप से स्वीकार नहीं किया गया है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 4–6)

इस कृति का एक रोचक पक्ष रामकथा के स्थापित घटनाक्रम से इसका संबंध है। अयोध्या में राम के नहछू का चित्रण मिलता है, जबकि राम–विवाह की प्रसिद्ध कथा में विवाह–पूर्व राम जनकपुर की ओर जा चुके हैं। इस विसंगति को केवल 'त्रुटि' कहकर समाप्त कर देना लोकसाहित्य की प्रकृति को समझने में बाधक होगा। बाहरी स्रोत भी इस तथ्य की ओर संकेत करते हैं कि रामलला नहछू में अयोध्या के प्रसंग का स्वरूप प्रचलित रामकथा से अलग है। इससे एक

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकलता है– लोक अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुसार महान आख्यानों का पुनर्सृजन करता है। लोक के लिए राम केवल किसी एक ग्रंथ में स्थित पात्र नहीं हैं; वे लोकजीवन के संस्कारों में पुनः जन्म लेते हैं। अतः रामलला नहछू को शास्त्रीय रामकथा की घटनाक्रम–संगति से अधिक लोक–स्मृति की रचनात्मक स्वतंत्रता के संदर्भ में पढ़ना उपयोगी है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 5–6)

4. मौखिकता और पाठ–परंपरा : लिखित पाठ से आगे– रामलला नहछू की सांस्कृतिक प्रकृति को समझने के लिए इसकी पाठ–परंपरा पर ध्यान देना आवश्यक है। उपलब्ध अध्ययन में लिखित पाठ के साथ मौखिक गायन और लोकस्मृति की भूमिका पर बल दिया गया है। लोकगीत का पाठ स्थिर साहित्यिक पाठ की अपेक्षा प्रदर्शन, गायन और सामुदायिक स्मृति से अधिक गहरे रूप में जुड़ा होता है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 6–8)

इसीलिए इसकी प्रामाणिकता पर विचार करते समय केवल शब्द–पाठ को आधार बनाना पर्याप्त नहीं है। पांडुलिपि, भाषा, शैली, छंद, संपादकीय परंपरा और लोकप्रचलन– इन सभी को समेकित रूप से देखना आवश्यक है। काशी नागरी प्रचारिणी सभा से संबद्ध तुलसी–ग्रंथावली ने आधुनिक पाठ–परंपरा के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। (उपलब्ध पाठ, पृ. 6–8)

यहाँ लोक और लिखित साहित्य के संबंध की एक व्यापक अवधारणा सामने आती है– लोकसाहित्य केवल लिखे हुए साहित्य का निम्नतर रूप नहीं, बल्कि अपनी स्वतंत्र स्मृति–व्यवस्था वाला सांस्कृतिक ज्ञान–तंत्र है।

5. सोहरः साहित्यिक विधा नहीं, सामुदायिक स्वर– रामलला नहछू का सोहर–छंद में होना इसकी सांस्कृतिक संरचना को समझने की कुंजी है। सोहर मूलतः सामुदायिक गायन से जुड़ी लोकपरंपरा है। इसकी लय, पुनरावृत्ति, संबोधन और सामूहिक उच्चारण इसे पाठ से अधिक प्रदर्शन का माध्यम बनाते हैं। उपलब्ध पाठ में बार–बार आने वाला 'हो' इस लोक–संगीतात्मकता को पुष्ट करता है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 8–9)

तुलसी ने रामकथा को राजसभा या मंदिर की ऊँचाई से उतारकर लोक के आँगन में स्थापित किया। यहाँ राम के लिए गाया जाने वाला गीत किसी विशिष्ट वर्ग की धार्मिक संपत्ति नहीं है। स्त्रियाँ गाती हैं, समुदाय सुनता है और संस्कार सामूहिक बन जाता है।

इस दृष्टि से रामलला नहछू का सोहर–रूप भक्ति के लोकतंत्रीकरण का माध्यम बनता है। ईश्वर तक पहुँचने के लिए जटिल दार्शनिक विमर्श आवश्यक नहीं; लोकगीत, पारिवारिक संस्कार और सामूहिक आनंद भी धार्मिक अनुभव के वैध माध्यम हो सकते हैं। (उपलब्ध पाठ, पृ. 8–9)

6. अयोध्याः भूगोल से सांस्कृतिक समुदाय तक– कृति में अयोध्या मात्र राम की राजधानी नहीं है। वह एक जीवंत सांस्कृतिक समुदाय के रूप में सामने आती है। "आजु अवधपुर आनँद" जैसी उद्घोषणा में 'आनंद' व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक है। दशरथ का गृह, नगर, मंडप, चौक, कलश, मोतियों की झालरें और दीपकृये सभी मिलकर उत्सव के सामाजिक भूगोल का निर्माण करते हैं। (उपलब्ध पाठ, पृ. 9दृ10)

"आजु अवधपुर आनँद..."

अयोध्या का राजमहल इस प्रसंग में लोक के घर से बहुत दूर नहीं रहता। मंडप और चौक जैसी संरचनाएँ राजसी आयोजन को घरेलू संस्कार की आत्मीयता से जोड़ती हैं। इस प्रकार तुलसी राजकीय और लोक–संस्कृति के बीच एक सांस्कृतिक सेतु निर्मित करते हैं। अयोध्या यहाँ सत्ता का केंद्र कम और साझे उत्सव का सांस्कृतिक परिसर अधिक है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 9–10)

7. लोकस्त्रियाँ : उत्सव की सहभागी नहीं, सांस्कृतिक वाहक– कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण समाज–सांस्कृतिक पक्ष विभिन्न व्यवसायों से जुड़ी स्त्रियों की सक्रिय उपस्थिति है। नाइन, मालिन, दर्जिन, अहिरिन, तंबोलिन, मोचिन, बारिन आदि स्त्रियाँ अपने–अपने पारंपरिक कौशल और सामग्री के साथ उत्सव में आती हैं। (उपलब्ध पाठ, पृ. 10–12)

यह सूची केवल व्यवसायों की सूची नहीं है। इसके भीतर एक संपूर्ण सामाजिक अर्थव्यवस्था दिखाई देती है। उत्सव के लिए फूल चाहिए तो मालिन आवश्यक है; वस्त्र या सिलाई का प्रसंग है तो दर्जिन; पान–सुपारी की व्यवस्था है तो तंबोलिन; संस्कारगत सेवा है तो नाइन। इस प्रकार उत्सव का सौंदर्य अनेक अदृश्य श्रमों के सम्मिलन से निर्मित होता है। यहीं से रामलला नहछू का एक आधुनिक पाठ संभव होता हैकृउत्सव की भव्यता के पीछे श्रम करने वाले समुदायों की सांस्कृतिक दृश्यता। कृति इन श्रमों को केवल उपयोगिता के स्तर पर नहीं रखती; उन्हें मंगलोत्सव की अनिवार्य सांस्कृतिक गतिविधि में रूपांतरित करती है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 10–12)

8. नाइन : श्रम, सेवा और भक्ति का संगम– नाइन की भूमिका इस कृति की सांस्कृतिक संरचना में विशेष महत्त्व रखती है। वह संस्कार की निष्क्रिय दर्शक नहीं, बल्कि अनुष्ठान को पूरा करने वाली केंद्रीय कर्मकर्ता है। राम के चरणों का नहछू करना उसके लिए पेशागत कार्य भी है और धार्मिक सेवा भी। (उपलब्ध पाठ, पृ. 11–12)

यहीं तुलसी की भक्ति–दृष्टि का एक महत्त्वपूर्ण आयाम सामने आता है। भक्ति केवल मंदिर में की जाने वाली पूजा नहीं है; अपने श्रम को श्रद्धा के साथ करना भी भक्ति का रूप ग्रहण कर सकता है। नाइन के हाथ में नहरनी, महावर और संस्कार–सामग्री है; लेकिन सांस्कृतिक अर्थ में उसके हाथ में लोकपरंपरा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी भी है। इस प्रकार उसका श्रम सामाजिक और आध्यात्मिक दोनों अर्थ ग्रहण करता है। यहाँ 'सेवा' और 'श्रम' के बीच जो संबंध बनता है, वह रामलला नहछू को आधुनिक श्रम–संस्कृति के विमर्श से जोड़ने की पर्याप्त संभावना प्रदान करता है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 11–12)

9. 'रामलला' : देवत्व का मानवीकरण और वात्सल्य– रामलला नहछू के शीर्षक में प्रयुक्त 'रामलला' शब्द स्वयं कृति की दृष्टि का संकेतक है। यहाँ राम मर्यादा–पुरुषोत्तम के विराट रूप में नहीं, बल्कि घर के बच्चे की तरह उपस्थित

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

हैं। कौशल्या का मातृस्नेह, बालक राम की सहजता, संकोच और मुस्कान इस अनुभव को और आत्मीय बनाते हैं। (उपलब्ध पाठ, पृ. 12–13)

यहाँ भक्ति में दूरी कम होती है और संबंध बढ़ता है। भक्त और भगवान का संबंध उपासक–उपास्य से आगे बढ़कर माता–पुत्र, परिवार और समुदाय का संबंध बन जाता है। यही रामलला नहछू की विशिष्ट सांस्कृतिक शक्ति है–यह ईश्वर को लोक के भीतर लाकर लोक को ही आध्यात्मिक अनुभव का क्षेत्र बना देता है।

10. गारी और हास–परिहास : पवित्रता की उन्मुक्त भाषा– लोकसंस्कारों में 'गारी' की परंपरा सामान्यतः औपचारिक धार्मिक भाषा से अलग दिखाई देती है। रामलला नहछू में हास–परिहास और गारी उत्सव की स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं। (उपलब्ध पाठ, पृ. 14–15)

इसे अशिष्टता या धार्मिक मर्यादा के उल्लंघन के रूप में देखना लोकसंस्कृति की आंतरिक संरचना को न समझ पाने के समान होगा। उत्सव एक ऐसा सामाजिक अवसर निर्मित करता है जहाँ संबंधों में अस्थायी उन्मुक्तता आती है। हास्य तनाव को कम करता है और समुदाय को अधिक आत्मीय बनाता है। इस अर्थ में गारी लोकसमुदाय की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति की वैकल्पिक भाषा है। वह औपचारिकता के स्थान पर आत्मीयता को स्थापित करती है।

11. नेग, दान और न्योछावर : आर्थिक विनिमय से सामाजिक संबंध तक– कृति में नेग, दान और न्योछावर का विशेष महत्त्व है। पहली दृष्टि में ये आर्थिक व्यवहार दिखाई देते हैं, लेकिन लोकसंस्कृति के स्तर पर इनका अर्थ इससे कहीं व्यापक है। नेग श्रम की सामाजिक स्वीकृति है; दान सामुदायिक उदारता का संकेत है और न्योछावर मंगलकामना तथा भावनात्मक समर्पण का। (उपलब्ध पाठ, पृ. 15–16)

इस प्रकार रामलला नहछू एक ऐसी अर्थव्यवस्था का संकेत देती है जिसमें वस्तु का मूल्य केवल बाजार द्वारा निर्धारित नहीं होता। संबंध, सम्मान, परंपरा और शुभकामना भी विनिमय को अर्थ प्रदान करते हैं। आधुनिक उपभोक्तावादी व्यवस्था की तुलना में यह लोक–अर्थव्यवस्था हमें स्मरण कराती है कि आर्थिक व्यवहार भी सांस्कृतिक संबंधों का वाहक हो सकता है।

12. भक्ति और लोक : दो पृथक संसार नहीं– रामलला नहछू की केंद्रीय विशेषता भक्ति और लोकजीवन के बीच किसी कृत्रिम विभाजन का न होना है। गीत है तो भक्ति है; संस्कार है तो भक्ति है; नाइन का श्रम है तो सेवा है; गारी है तो उत्सव की आत्मीयता है; नेग है तो सामाजिक संबंध है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 16–17)

तुलसी की दृष्टि में लोकजीवन आध्यात्मिकता से बाहर नहीं है। बल्कि लोकाचार स्वयं साधना में परिवर्तित हो सकता है। यही कारण है कि कृति के धार्मिक अर्थ को उसके सामाजिक संदर्भ से अलग करके पढ़ना अधूरा होगा। इस आधार पर रामलला नहछू को लोकभक्ति की सांस्कृतिक प्रयोगशाला कहा जा सकता है, जहाँ धर्म जीवन से बाहर नहीं, जीवन की गतिविधियों के भीतर निर्मित होता है।

13. भाषा और शिल्प : साहित्यिक अवधी से लोकाभिमुख अवधी की ओर– कृति की भाषा पूर्वी अवधी की लोकाभिमुख संरचना से जुड़ी हुई है। इसकी शब्दावली, संबोधन, ध्वनि, पुनरावृत्ति और 'हो' की आवृत्ति इसे पाठ से अधिक गायन के लिए उपयुक्त बनाती है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 17–18)

तुलसी की शिल्पगत उपलब्धि यह है कि वे लोकभाषा को केवल संवाद का माध्यम नहीं बनाते, बल्कि उसे सांस्कृतिक संवेदना का वाहक बना देते हैं। मंडप, कलश, मोती, महावर, वस्त्र, आभूषण, गीत और वाद्य–इनका दृश्यात्मक संचय कृति को लगभग एक श्रव्य–दृश्य सांस्कृतिक प्रदर्शन में बदल देता है। इस दृष्टि से रामलला नहछू का शिल्प 'कथात्मक' से अधिक 'प्रदर्शनात्मक' है। पाठ पढ़ते हुए पाठक एक घटना नहीं, बल्कि एक उत्सव को घटित होते हुए अनुभव करता है।

14. श्रम–संस्कृति और सामाजिक अंतर्संबंध– कृति में दिखाई देने वाला व्यवसायगत विभाजन मध्यकालीन समाज की संरचना की ओर संकेत करता है। किंतु इसके भीतर केवल विभाजन नहीं, पारस्परिक निर्भरता भी है। उत्सव की पूर्णता किसी एक व्यक्ति या वर्ग से संभव नहीं; अनेक पेशागत समुदायों के सहयोग से ही उसका सांस्कृतिक रूप तैयार होता है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 10–12; 18–19)

इसलिए इन पात्रों को केवल 'जातिगत व्यवसायों' की सूची के रूप में पढ़ना पर्याप्त नहीं है। वे लोकजीवन के सांस्कृतिक श्रम–विभाजन का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ एक सावधानी भी आवश्यक है। इस संरचना को आधुनिक समानता की कसौटी पर सीधे रखकर न तो आदर्शीकृत किया जाना चाहिए और न ही तत्काल खारिज। इसे मध्यकालीन सामाजिक संदर्भ में श्रम, पेशा, प्रतिष्ठा और परस्परावलंबन की संरचना के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा। (उपलब्ध पाठ, पृ. 19–20)

15. लोकस्त्री और सांस्कृतिक एजेंसी– रामलला नहछू का एक महत्त्वपूर्ण आधुनिक पुनर्पाठ स्त्री की सांस्कृतिक भूमिका के संदर्भ में किया जा सकता है। यहाँ स्त्रियाँ केवल उत्सव देखने वाली नहीं हैं; वे गीत गाती हैं, संस्कार संपन्न करती हैं, सामग्री लाती हैं, हास–परिहास करती हैं, नेग प्राप्त करती हैं और उत्सव की सांस्कृतिक भाषा का निर्माण करती हैं। (उपलब्ध पाठ, पृ. 18–19)

अर्थात् लोकसंस्कृति की निरंतरता में स्त्रियों की भूमिका केंद्रीय है। लिखित इतिहास प्रायः राजाओं, युद्धों और संस्थाओं को दर्ज करता है, जबकि लोकगीत घरेलू और सामुदायिक जीवन की उन प्रक्रियाओं को सुरक्षित रखते हैं जिन्हें औपचारिक इतिहास अक्सर उपेक्षित कर देता है। इस दृष्टि से रामलला नहछू लोकस्त्री के सांस्कृतिक श्रम का एक महत्त्वपूर्ण पाठ बन जाती है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

16. सांस्कृतिक स्मृति और लोक की सृजनात्मक स्वतंत्रता– रामकथा जैसी व्यापक धार्मिक–सांस्कृतिक परंपरा जब लोक में प्रवेश करती है तो वह स्थिर नहीं रहती। लोक उसे अपने अनुभव, भूगोल, संस्कार और सामुदायिक आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्संरचित करता है। रामलला नहछू इसका सशक्त उदाहरण है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 20–21)

यहाँ रामकथा का उद्देश्य केवल कथा सुनाना नहीं है। उद्देश्य है–अपने सांस्कृतिक जीवन को राममय बनाना। इसलिए अयोध्या में नहछू का प्रसंग ऐतिहासिक रामकथा के घटनाक्रम से अधिक लोक की सांस्कृतिक आकांक्षा का दस्तावेज है। लोक अपने आराध्य को अपने घर, अपने आँगन और अपने संस्कारों में स्थापित करता है।

17. समकालीन संदर्भ : उत्सव, समुदाय और बाजार– आज के समय में पारिवारिक संस्कारों और मांगलिक आयोजनों का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। आयोजन अधिकाधिक बाजार, प्रदर्शन और पेशेवर प्रबंधन से जुड़ते जा रहे हैं। ऐसे समय में रामलला नहछू का सांस्कृतिक संदेश नए अर्थ ग्रहण करता है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 20–21)

कृति यह संकेत देती है कि उत्सव का मूल्य उसकी बाहरी भव्यता में नहीं, बल्कि उसमें शामिल लोगों की साझेदारी और आत्मीयता में है। यहाँ सजावट भी सामूहिक है, श्रम भी सामूहिक है, गायन भी सामूहिक है और आनंद भी सामूहिक। इस अर्थ में रामलला नहछू आज के समय में 'सस्टेनेबल कम्युनिटी कल्चर' या सामुदायिक सांस्कृतिक जीवन की अवधारणा पर पुनर्विचार का अवसर प्रदान करती है। आधुनिक शब्दावली में कहें तो यह कृति हमें उत्सव की सामुदायिक अर्थव्यवस्था की ओर लौटाती है।

18. निष्कर्ष : लोकाचार का आध्यात्मिकीकरण– रामलला नहछू की महत्ता उसकी लघुता में नहीं, बल्कि उसकी सांस्कृतिक घनत्व में है। सीमित पदों में यह रचना संस्कार, स्त्री–जीवन, श्रम, नेग, संगीत, हास्य, परिवार, समुदाय और भक्ति को एक ही सांस्कृतिक परिदृश्य में उपस्थित करती है। (उपलब्ध पाठ, पृ. 21–22)

इस कृति का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रतिपाद्य यह है कि लोकजीवन और आध्यात्मिक जीवन दो पृथक क्षेत्र नहीं हैं। लोकाचार जब प्रेम और श्रद्धा से संपन्न होता है तो वह साधना का रूप ग्रहण कर लेता है; श्रम सेवा में बदल जाता है; गीत उपासना का माध्यम बन जाता है और सामुदायिक उत्सव धार्मिक अनुभव का रूप ले लेता है।

'रामलला' इस पूरी प्रक्रिया का केंद्र हैं। वे यहाँ केवल धर्मग्रंथों के राम नहीं, बल्कि घर–आँगन के राम हैं। कौशल्या का पुत्र, लोकस्त्रियों का प्रिय बालक और समुदाय के उत्सव का केंद्र। इसी आत्मीयता के कारण तुलसी का राम लोक से जुड़ता है और लोक स्वयं रामभक्ति की सांस्कृतिक भूमि बन जाता है।

अतः रामलला नहछू को केवल 'राम के नहछू संस्कार का वर्णन' कह देना उसके व्यापक अर्थ–संसार को सीमित करना होगा। यह कृति भारतीय लोकसंस्कृति में धर्म के सामाजिक रूपांतरण, श्रम की सांस्कृतिक प्रतिष्ठा, स्त्री–सहभागिता और सामुदायिक स्मृति के निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है। इसकी सबसे बड़ी शक्ति इसी में है कि यह दिव्यता को आकाश से उतारकर लोक के बीच स्थापित करती है। और शायद यही इस लघु कृति का सबसे आधुनिक पाठ भी है–

संस्कृति वहाँ जीवित रहती है जहाँ लोग केवल परंपरा का अनुकरण नहीं करते, बल्कि उसे मिलकर जीते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तुलसीदास, गोस्वामी। रामलला नहछू। विविध संस्करण।
2. शुक्ल, रामचंद्र; भगवानदीन एवं व्रजरत्नदास, संपा. तुलसी–ग्रंथावली, खंड 2। काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. शुक्ल, रामचंद्र। हिंदी साहित्य का इतिहास। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद। हिंदी साहित्य की भूमिका। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. द्विवेदी, हजारीप्रसाद। हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. वर्मा, रामकुमार। हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास। लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
7. सिंह, उदयभानु। तुलसी काव्य मीमांसा। राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. अग्रवाल, वासुदेवशरण। पृथ्वीपुत्र। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. उपाध्याय, कृष्णदेव। लोकसाहित्य की भूमिका। साहित्य भवन, प्रयागराज।
10. सत्यार्थी, देवेंद्र। लोकगीतों की यात्रा। विभिन्न संस्करण।
11. उपाध्याय, कृष्णदेव। भोजपुरी लोकसाहित्य का अध्ययन। हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी।
12. पांडेय, रामकिंकर। मानस : संस्कृति और लोकजीवन। विभिन्न संस्करण।
13. शर्मा, रामविलास। परंपरा का मूल्यांकन। राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. त्रिपाठी, विश्वनाथ। लोकवादी तुलसीदास। राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. तुलसी–ग्रंथावली, डिजिटल संस्करण, खंड 2, काशी नागरी प्रचारिणी सभा–आधारित पाठ।

*****